

**काव्यहरण** पुं. (तत्.) किसी कवि की रचना को स्वयं के नाम से प्रसिद्ध कर देना।

**काव्यानुभूति** स्त्री. (तत्.) 1. काव्य की आनंदमयी अनुभूति 2. रसानुभूति या सौंदर्यानुभूति।

**काव्यार्थापत्ति** स्त्री. (तत्.) अर्थापत्ति नामक एक अलंकार, इस अर्थालंकार में कठिनता से सरल कार्य की सिद्धि का कथन होता है।

**काव्योचित न्याय** पुं. (तत्.) किसी काव्य में दुष्टों का दुखद अंत और सज्जनों के सुखद अंत का वर्णन।

**काश** पुं. (अर.) 1. ईश्वर करे, खुदा करे 2. शीशा, काँच।

**काश** पुं. (तत्.) 1. एक प्रकार की घास जिसमें सफेद फूल होते हैं 2. खाँसी का रोग 3. प्रकाश, चमक।

**काशिका** स्त्री. (तत्.) काशी नगरी का एक नाम, पाणिनि की अष्टाध्यायी की प्रसिद्ध टीका वि. प्रकाशित करने वाली।

**काशिराज** पुं. (तत्.) काशी का राजा।

**काशी** पुं. (तत्.) प्राचीन भारत के एक राज्य का नाम, काशी राज्य की राजधानी, उसे वाराणसी भी कहते हैं।

**काशी-करवट** पुं. (तत्.+तद्.) भारतीय मान्यता के अनुसार काशी में मृत्यु होने से मुक्ति मिलती है और इसके लिए लोग काशी जाकर प्राण छोड़ते हैं इसे काशी करवट कहते हैं और इसे पुण्यदायक माना जाता है, काशी में एक स्थान निर्धारित है जिसे काशी करवट कहते हैं।

**काशीफल** पुं. (तत्.) एक फल जिसे कद्दू कहते हैं और सब्जी के रूप में खाते हैं।

**काश्त** स्त्री. (फा.) खेती, खेत की जगह, कृषि काश्त: (फा.) वि. जोता-बोया (जिस पर कृषि की गयी हो)।

**काश्तकार** वि. (फा.) कृषि का काम करने वाला, कृषक।

**काश्तकारी** स्त्री. (फा.) खेती या कृषि का काम, किसानी।

**काश्मीरा** पुं. (तत्.) मोटा ऊनी कपड़ा टि. (ऊनी कपड़े प्रायः काश्मीर में निर्मित होने के कारण 'काश्मीरा' शब्द उससे संबद्ध माना जाता है।

**काश्मीरी** वि. (तत्.) काश्मीर में उपलब्ध होने वाला या उत्पन्न होने वाला व्यक्ति, वस्तु आदि।

**काश्यप** वि. (तत्.) कश्यप ऋषि के वंश या गोत्र से संबंधित, कश्यप वंशज।

**काश्यपि** पुं. (तत्.) 1. गरुड़ 2. सूर्य का सारथी अरुण।

**काश्यपी** स्त्री. (तत्.) धरती या पृथ्वी।

**काश्यपेय** पुं. (तत्.) 1. कश्यप ऋषि के पुत्र 2. सूर्य के सारथी अरुण, गरुड़।

**काष** पुं. (तत्.) 1. परख करने की कसौटी 2. धारदार चीज पर धार चढ़ाने का पत्थर।

**काषाय** वि. (तत्.) जिसे कसैले या गेरुए रंग में रंगा गया हो। गेरुआ, कसैली वस्तुओं के रस में रंगा गया कपड़ा (गेरुआ वस्त्र)।

**काष्ठ** पुं. (तत्.) लकड़ी या काठ। लकड़ी का लट्ठा, ईंधन।

**काष्ठ-कीट** पुं. (तत्.) लकड़ी में लगने वाला घुन या कीड़ा।

**काष्ठ-कुट्टिम** पुं. (तत्.) लकड़ी जड़ा फर्श या लकड़ी का फर्श।

**काष्ठ-तक्ष** पुं. (तत्.) लकड़ी चीरने वाला।

**काष्ठ-तक्षक** पुं. (तत्.) लकड़ी चीरने/काटने का काम करने वाला कर्मकार या बढ़ई, लकड़हारा।

**काष्ठ-दारु** पुं. (तत्.) देवदारु नामक वृक्ष, ढाक या पलाश का पेड़।

**काष्ठ-पुत्तलिका** स्त्री. (तत्.) काठ की पुतली, कठपुतली।

**काष्ठ-प्राचीर** पुं. (तत्.) लकड़ी की चारदीवारी या दीवाल।